राहुल गाँधी

कल, आज और कल

संपादक

एच.एल. दुसाध

डॉ. अनीता गौतम

राहुल गांधी
कल, आज और कल

राहुल गांधी
कल, आज और कल

सम्पादक

एच.एल. दुसाध
डॉ. अनीता गौतम

दुसाध प्रकाशन
लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2014
द्वितीय संस्करण : 2023

ISBN : 978-81-87618-49-2

प्रकाशक : **दुसाध प्रकाशन**
प्लाट नं. 23/बी, मकान नं. 2/1467
डाइवर्सिटी हाउस, वार्ड-शंकरपुरवा
आदिल नगर, कल्याणपुर, लखनऊ-226022
E-mail : hl.dusadh@gmail.com
मो. : 9654816191, 9696252469

© **प्रकाशक**

मूल्य : 500.00 रुपये

रचना	:	**राहुल गांधी : कल आज और कल**
संपादक	:	एच.एल. दुसाध, डॉ. अनीता गौतम
आवरण	:	शशिकान्त
शब्दांकन	:	कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक	:	क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली-32

अनुक्रम

सम्पादकीय (द्वितीय संस्करण)		9
सम्पादकीय (प्रथम संस्करण)		25

अध्याय-1 : कांग्रेस की अभूतपूर्व पराजय

कांग्रेस को हर दांव पड़ा उल्टा		41
बेटे को बचाने फिर आगे आईं सोनिया		43
हार की समीक्षा करने वाली कमेटियों से भी हार गई कांग्रेस		44
प्रियंका लाओ, कांग्रेस बचाओ		46
माँ-बेटे की भेंट चढ़ी कांग्रेस	*—अश्विनी कुमार*	47
पार्टी की हार से उपजा सवालों का पहाड़		49
टूट भी सकती है कांग्रेस	*—नीरजा चौधरी*	50
अकेला पड़ गया हाथ, नहीं मिला साथ	*—सरोज नागी*	52
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!	*—डॉ. दर्शन सिंह हरविंदर*	55
राहुल क्यों हारे, प्रियंका क्या करेंगी!	*—राजकिशोर*	59
कहीं अपने ही न छोड़ दें हाथ का साथ!	*—रणविजय सिंह*	61
तो क्या कांग्रेस युग का अंत हो गया है?	*—अरुणा सिंह*	64
अन्दरूनी लड़ाई में ढही कांग्रेस	*—अन्तत विजय*	68

अध्याय-2 : 15वीं लोकसभा चुनाव का महानायक

राजनीति के 'शिशु' ने साबित की सियासी परिपक्वता		73
राहुल फैक्टर ने दिखाया जादू	*–अजय तिवारी*	75
राहुल बाबा के प्रचार के सामने फीका रहा भाजपा का अभियान		77
अपनी राजनीति का खाका खुद ही तैयार किया राहुल गांधी ने	*–प्रदीप श्रीवास्तव*	79
राहुल गांधी का करिश्मा	*–संजय गुप्त*	81
कांग्रेस की विजय : विपक्ष की रणनीति की हार	*–एच.एल. दुसाध*	83
राहुल की राह में एवरेस्ट : जाति चेतना का राजनीतिकरण	*–एच.एल. दुसाध*	90

अध्याय-3 : राहुल गांधी : सोलहवीं लोकसभा चुनाव का ट्रेजडी नायक

कुनबे को बचाना चुनौती	*–इंदर मल्होत्रा*	97
घिरता अन्धकार, साथ छोड़ते साए	*–अरविन्द मोहन*	99
कांग्रेस के भविष्य की राह	*–आशुतोष मिश्र*	102
कठिन राह पर कांग्रेस	*–डॉ. निरंजन कुमार*	105
हम एक हैं : भाजपा-कांग्रेस	*–एच.एल. दुसाध*	108
कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार	*–एच.एल. दुसाध*	111
कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों!	*–एच.एल. दुसाध*	113
राहुल गांधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक ट्रेजडी नायक	*–एच.एल. दुसाध*	119
राहुल गांधी : कल, आज और कल	*–एच.एल. दुसाध*	122

अध्याय-4 : राहुल गांधी : सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन

भाजपा वर्ग–शत्रु तो कांग्रेस बहुजनों का वर्ग-मित्र है	*–एच.एल. दुसाध*	131
कांग्रेस ने फिर खुद को साबित किया : बहुजनों का वर्ग-मित्र!	*–एच.एल. दुसाध*	135

भाजपा की हार सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है :
सामाजिक न्यायवादी विजन! *—एच.एल.दुसाध* 139

राहुल गाँधी : भारतीय राजनीति के दारा शिकोह! *—जावेद अनीस* 149

मंडल-3 की गाड़ी हांक सकते हैं राहुल *—योगेंद्र यादव* 153

कर्णाटक का सन्देश *—एच. एल. दुसाध* 158

सोशल जस्टिस का पिटारा! *—एच.एल. दुसाध* 164

भाजपा को शिकस्त देना सबसे आसान
पॉलिटिकल टास्क *—एच.एल. दुसाध* 173

राहुल गाँधी का परिचय 178

सम्पादकीय : द्वितीय संस्करण

डियर सर/ मैडम!

कर्णाटक में कांग्रेस की ऐतिहासिक विजय के बाद जब राजनीतिक विमर्श के केंद्र में राहुल गांधी और उनका सामाजिक न्यायवादी एजेंडा आ गया : मैंने 22 मई को बदले हुए हालात में लोगों की राय परखने के मकसद से अपने व्हाट्सप ग्रुप और फेसबुक पर यह पोस्ट डाला, '2014 में जब मोदी की सुनामी में कांग्रेस राजनीति के पंडितों के मुताबिक आईसीयू में पहुंच गयी और खुद कांग्रेस के कई प्रान्तों के नेता राहुल गांधी को ख़ारिज करते हुए नेतृत्व प्रियंका के हाथ में देने की मांग उठाने लगे, वैसे समय में कांग्रेस और राहुल गाँधी के पुनरुद्धार के लिए मैंने अक्टूबर 2014 में डॉ. अनीता गौतम के साथ मिलकर एक किताब तैयार किया, जिसमें कुछ ऐसे नुस्खे सुझाये गए थे, जिसका अनुसरण कर न सिर्फ कांग्रेस पुनर्जीवित हो सकती थी, बल्कि राहुल गांधी पंडित नेहरू की बुलंदी छू सकते थे। 'दुसाध प्रकाशन' द्वारा तैयार उस किताब का नाम था, 'राहुल गाँधी : कल, आज और कल!' उस किताब में हमने राहुल गांधी और कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए कैसे लॉजिक रखे थे, उससे अवगत कराने के लिए उस किताब के कुछ लेख पेश करने जा रहा हूँ। उम्मीद है आप पढ़ेंगे!'

कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार

उस किताब के आवरण के साथ जो लेख हमने पोस्ट किये थे, वे रहे : **कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार, कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों** तथा **राहुल गांधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक महानायक!** ये तीनों लेख राहुल गांधी वाली किताब के क्रमशः 95, 98 तथा 103 पेज पर छपे थे। 22 मई के मेरे उस पोस्ट पर विद्वान मित्रों की बहुत उत्साहवर्द्धक राय आई। सबसे अच्छा रिस्पांस **राहुल गांधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक महानायक** पर मिली! इस पर चर्चित टिप्पणीकार सुब्रतों चटर्जी की राय रही, **बहुत उम्दा विश्लेषण**! वहीं हेमंत ठाकुर, जो अक्सर मेरे पोस्टों से असहमति जताते रहते हैं, का कमेंट रहा, **पिछले दो दशक के राजनीतिक**

इतिहास के साथ कई चुनावी पड़ावों के कालक्रम एवं घटनाक्रम पर आधारित बेहतरीन विश्लेषण एवं आंकलन है। मानवीय मूल्यों को तरजीह देने वाले नेता के व्यक्तित्व को सही शब्दों में व्यक्त की गयी है। सचमुच लाजवाब! प्रोफ़ेसर शांति यादव की राय रही, जो भी विश्लेषक हैं राहुल गांधी को बदनाम कर रहे या नकार रहे हैं.वे कही न कही नकारात्मकता से ग्रसित हैंः चाहे वे अख़बार के हों या सोशल मीडिया के हों। उनका दिमाग कूड़े के ढेर से ज्यादा कुछ भी नही हैं। गोदी मीडिया तो मोदी का तोता है, उसका तो कहना ही क्या?सत्य संघर्ष करता है पर, जीतता अवश्य है। भले ही थोड़ा समय लगे। राहुल गांधी अब जननेता हैं, जनता ही उन्हें जिताएगी। राहुल गाँधी को बहुत लालच भी नही है पीएम बनने का। पर, वह अवश्य बनेंगेः इतिहास पुरुष होंगे!

कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों! पर उमाशंकर आर्य साहब की राय रही, बेशक आपका लेखन सराहनीय है तथा कांग्रेस के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत पर आधारित है। आपने देखा होगा कि कर्णाटक चुनाव में श्री राहुल गांधी ने जाति आधारित जनगणना का मुद्दा उठा दिया। कांग्रेस अपने उदय के समय से पिछले वर्षो तक ऐसा मुद्दा नही उठा पाई। एक नई क्रांति का प्रारंभ श्री राहुल गांधी जी ने किया है। यह इस प्रक्रिया की ओर ले जाता है कि विकास के सभी स्रोतों में जनसंख्या के अनुपात में बंटवारा हो। यह परिनिर्वाण प्राप्त कांशीराम जी के नारे- जिसकी जितनी संख्या भारी, उतनी उसकी भागीदारी- को मूर्त रूप देना है। और यह उन्होंने मान्यवर कांशीराम जी के विषय में अध्ययन और उनके खास अनुयायी से वार्ता करके सीखा,जो आज प्रदेश के शीर्ष पद पर हैं। वार्ता के दौरान मुझसे उन्होंने बताया कि जब श्री राहुल गांधी जी उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों का दौरा कर रहे थे, तब उन्होंने सवाल किया कि कांशीराम दलित समाज में इतना लोकप्रिय कैसे हुए? फिर वह बात उनके दिलो दिमाग में बैठ गयी। और आज वे परिवर्तनकारी राजनीति की तरफ बढ़ रहे हैं, यह एक सुखद एहसास है! इसे हम सभी को गहराई से समझना होगा और समय की मांग है कि कांग्रेस के साथ जुड़कर श्री राहुल जी और खड्गे जी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को मजबूत बनाया जाय। माननीय श्री मल्लिकार्जुन खड्गे जी का कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना जाना उसका प्रारंभ है। मैं अपने इस विचार पर आपकी टिपण्णी चाहूँगा!

कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार! लेख पर कईयों की राय हौसला बढाने वाली रही, पर, एक प्रोफ़ेसर मित्र के कमेंट ने तो मेरी किताब को बहुत खास बना दिया! उनका कमेंट रहा, आज साफ़ दिखाई दे रहा है कि पिछले फ़रवरी में कांग्रेस ने रायपुर के अपने 85वें अधिवेशन से खुद को जिस तरह सामाजिक न्याय से जोड़ा एवं कर्णाटक में सामाजिक न्याय के अजेंडे के जोर से जिस तरह भाजपा की नफरती राजनीति को मात दिया, उससे इसका पुनरुद्धार हो चुका है, इसमें कोई संदेह है ही नही है।

कांग्रेस अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा को रिप्लेस करती दिख रही है। ऐसा लगता है मानों कांग्रेस ने आपकी किताब से अपने पुनरुद्धार की आइडिया लिया और आज सामाजिक न्याय के सबसे बड़े पैरोकार के रूप में अपनी छवि बना ली है। उसके बदले स्वरुप को देखकर कहा जा सकता है कि आपकी किताब 'राहुल गांधी : कल...' पोलिटिकल राइटिंग की एक अद्भुत मिसाल है! कुल मिलाकर इस पुस्तक से जुड़े तीन लेखों पर लोगों का जो उत्साहवार्द्धक कमेंट आया उसका यह असर हुआ कि दर्जन भर से अधिक लोग इस किताब को खरीदने की पेशकश कर दिए। चूंकि वर्तमान में मेरे पास इस किताब की पांच प्रतिया भी नहीं हैं, इसलिए एकाधिक कारणों से बदले हुए हालात में मैंने इस किताब का दूसरा संस्करण निकालने का निर्णय लिया, जो आपके हाथों में है!

पूरा होते दिख रहा है कांग्रेस के पुनरुद्धार का सपना

2014 में इस किताब के बारे में पाठकों को जानकारी देने के लिए इसके फ्लैप पर लिखा गया था **16 मई, 2014 को जब कांग्रेस की अकल्पनीय हार का चुनाव परिणाम आया, कई राजनीतिक विश्लेषकों को यह कहने में झिझक नही हुई कि मोदी की सुनामी ने कांग्रेस को आईसीयू में पहुंचा दिया है। इसी तरह कुछ ने जहां इसके भविष्य में टूटने की सम्भावना जता दी, वहीं कईयों ने कांग्रेस के रूप में एक राजनीतिक युग के अंत की घोषणा कर डाला। यही नही, सभी टिपण्णीकारों ने एक स्वर में राहुल गांधी की क्षमता पर सवाल उठाते हुए पार्टी की हार के लिए व्यक्तिगत तौर पर उन्हें ही जिम्मेवार ठहराया। कुछ ने तो पार्टी का वजूद बचाए रखने के लिए प्रियंका को नेतृत्व सौंपने का सुझाव तक भी दे डाला।**

चुनाव परिणाम आने के एक डेढ़ महीने बाद जब विभिन्न प्रान्तों के स्थापित कांग्रेसी स्थानीय नेतृत्व के खिलाफ बगावत के जरिये राहुल गांधी को खारिज करने का परोक्ष अभियान शुरू कर दिए, उनकी देखादेखी राजनीति के पंडितों में भी उन्हें ख़ारिज करने की होड़ मच गयी.किन्तु राजनीति के पंडित यह भूल गए कि जिस राहुल गांधी को वे ख़ारिज कर रहे हैं, उसी राहुल गांधी को उन्होंने पंद्रहवी लोकसभा चुनाव में आज के नरेंद्र मोदी की भाँति ही तरह-तरह से सराहा था। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की निश्चित हार को जीत में बदलकर वह राजनीति के पंडितों की नज़रों में एक परिपक्व व करिश्माई नेता बन गए थे। उस चुनाव के बाद लोग उनमे पंडित नेहरु का अक्स देखने लगे थे। बहरहाल देश के तमाम राजनीतिक दलों का रंग-ढंग देखते हुए कांग्रेस के दुश्मन भी नही चाहेंगे कि यह पार्टी ख़त्म हो! इसी तरह चूँकि राहुल गांधी को ही इस पार्टी को नेतृत्व देना है, इसलिए कोई भी लोकतंत्र प्रेमी नही चाहेगा कि वह चिरकाल के लिए ट्रेजडी नायक बन कर रह जाएँ। ऐसे में कांग्रेस और राहुल गांधी का पुनरुद्धार कैसे हो, इस पर गहराई से विचार करना हर बुद्धिजीवी

का अत्याज्य कर्तव्य बन जाता है। इस दिशा में यह पुस्तक कुछ ऐसे नुस्खे सुझाती है, जिसका अनुसरण कर न सिर्फ कांग्रेस पुनर्जीवित हो सकती है, बल्कि राहुल गाँधी पंडित नेहरु की बुलंदियों को छू सकते हैं!

बहरहाल इसे एक सुखद संयोग कहा जायेगा कि 2014 में इस किताब के जरिये मैंने कांग्रेस के पुनरुद्धार का जो सपना देखा, वह साकार होता दिख रहा है। 2023 में आज की तारीख में भारतीय राजनीति पर नजर दौड़ाते हैं तो पातें है कि जो कांग्रेस 2014 में मोदी की सुनामी में आइसीयू में चली गयी थी, 2024 में राजनीति के ढेरों पंडित उसी कांग्रेस में अप्रतिरोध्य बन चुकी भाजपा की जगह लेने की सम्भावना देख रहे हैं। और जहां तक राहुल गाँधी का सवाल है, वह जननेता के साथ इंडिया की आशा और आकांक्षा का प्रतीक बन चुके हैं। वह किस हद लोगों को प्रभावित कर चुके हैं, इसका अनुमान इन पंक्तियों के लिखे जाने दौरान भीषण अशांत मणिपुर की घटना से जुड़े एक पोस्ट से लगाया जा सकता है। फेसबुक पर Rizwan Aijazi नामक एक व्यक्ति ने लिखा है, **140 करोड़ में है कोई जो मणिपुर में नोआखाली जैसी मिसाल दे सके!** इस पोस्ट पर Surendra Kumar का कमेंट है–**राहुल गांधी के सिवाय और कोई नही है भारत में! मुझे तो लगता है राहुल गांधी के रूप में महात्मा गांधी ने दोबारा जन्म लिया है। वह दुनिया को सत्य, अहिंसा और निःस्वार्थ सेवा का भाव सिखा रहे हैं, बल्कि वह तो महात्मा गांधी से कुछ कदम आगे लगते हैं। क्योंकि वह बच्चों को, बूढों को, बीमारों को गले लगा के उन्हें जूते तक पहनाते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि राहुल गांधी ने अपने आपको डी-क्लास कर दिया है, जो एक जननेता के लिए बहुत आवश्यक हैं। आज़ादी से पहले के हमारे महान कांग्रेसी नेताओं में जो गुण था, आज वह राहुल गाँधी में दिख रहा है।** सच में आज की तारीख में लोग उन्हें जननेता के रूप में अपने दिलों में जगह दे चुके हैं और उन्हीं से मोदी को शिकस्त देने की उम्मीद पाल रहे हैं। बहरहाल 2014 में जो कांग्रेस आईसीयू में चली गयी थी, आज बह कैसे भाजपा की जगह लेने की स्थिति में आती दिख रही है और 2014 का पप्पू आज कैसे भारतीय राजनीति का सबसे करिश्माई नेता और सामाजिक न्याय की राजनीति का नया आइकॉन बन गया है, इसका दस्तावेजीकरण किताब के **राहुल गांधी : सामाजिक न्याय की राजनीति का नया आइकॉन** नामक चौथे और अंतिम अध्याय में हुआ है। इसे पाठक ध्यान से पढेंगे, इसकी प्रत्याशा रहेगी!

कैसे राहुल में दिखने लगेगी नेहरू की छवि!

2014 में जब कांग्रेस की अभूतपूर्व पराजय के बाद नेतृत्व परिवर्तन को लेकर बगावत के स्वर उभरने लगे, तब मैंने किताब के पेज 95 पर छपे लेख **कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार** में कहा था, **जहाँ तक राहुल का सवाल है,वह पूरी तरह से ख़ारिज करने**

लायक नही हैं। 2009 में उनका परफ़ॉर्मेंस देखकर बहुतों को पंडित नेहरु की याद आ गयी थी। बहरहाल कांग्रेस पार्टी की असल समस्या नेतृत्व नही, एजेंडा है। यह पार्टी अपने सवर्णवादी चरित्र से उबरने में व्यर्थ रही है, इसीलिए वह भागीदारीमूलक नही, राहत और भीखनुमा एजेंडों पर निर्भर रहकर चुनाव में उतरी और बुरी तरह मात खाई। यदि वह 21वी सदी के वंचित वर्गों की आकांक्षा को समझते हुए शासन-प्रशासन और समस्त आर्थिक गतिविधियों में एससी/एसटी, ओबीसी और धार्मिक अल्पसंख्यकों को न्यायोचित हिस्सेदारी के मुद्दे पर चुनाव लड़ती : परिणाम भिन्न होता। बहरहाल आज यदि कांग्रेस सचमुच कोमा से उबरना चाहती है तो वह राहुल गांधी ही नेतृत्व में शक्ति के स्रोतों (आर्थिक-राजनीतिक-शैक्षिक-धार्मिक) में सामाजिक और लैंगिक विविधता का प्रतिबिम्बन कराने की लड़ाई लड़ने की घोषणा करे। ऐसा करने पर इस वर्ष के शेष में अनुष्ठित हो रहे विधानसभा चुनावों में ही वह चमत्कारिक परिणाम आएगा कि लोगों को 2009 के लोकसभा चुनाव की भाँति एक बार फिर राहुल में नेहरु की छवि दिखने लगेगी। पर, कांग्रेस के पुनरुद्धार की शतप्रतिशत सम्भावना के बावजूद सवाल पैदा होता है कि सोनिया-राहुल को घेरे रखनेवाले उनके सवर्ण सलाहकार क्या चाहेंगे कि कांग्रेस भारत के दलित/आदिवासी, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और महिलाओं को हर क्षेत्र में हिस्सेदारी के एजेंडे पर अपनी आगे राजनीति स्थिर करेंगे?

अगले दिन मैंने **कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों** लेख में कहा था, दरअसल कांग्रेस जैसे बड़े राजनीतिक संगठन से जुड़ा होना तथा नेहरु-गाँधी परिवार का वारिस होना राहुल के लिए जितना प्लस पॉइंट है, उससे कही ज्यादा यह माइनस पॉइंट बन गया है। कांग्रेसी डॉ. मनमोहन सिंह ही नही, पंडित नेहरु, इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी, नरसिंह राव इत्यादि की लोकतंत्र विरोधी आर्थिक नीतियों के कारण आज राहुल की स्थिति देश के सबसे लाचार नेता की बन गयी है। कांग्रेस के दिग्गजों की जिन ऐतिहासिक गलतियों ने राजीव-सोनिया तनय को बुरी तरह निस्तेज कर दिया है, उन्हीं गलतियों ने छोटे-बड़े तमाम गैर-कांग्रेसी नेताओं को महा-उर्जावान बना दिया है...। हिंदी पट्टी का विशाल अंचल, खासकर यूपी-बिहार, जहां से राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय होती है, में जाति चेतना का प्रबल राजनीतिकरण ही कांग्रेस और राहुल गाँधी की राह में सबसे बड़ी बाधा है। यह जाति चेतना का राजनीतिकरण ही है जिसके चलते 2009 के लोकसभा चुनाव में एक नायक के रूप में उभरे राहुल गाँधी को 2010 में बिहार और 2012 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में एक ट्रेजडी नायक के रुप में तब्दील हो जाना पड़ा। उसी बात की पुनरावृति फिर लोकसभा चुनाव-2014 में भी हुई है। तो शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता के प्रतिबिम्बन से परहेज के कारण जो कांग्रेस दलित, आदिवासी, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों से कटकर रह गई है, उस कांग्रेस के सवर्ण रणनीतिकारों ने राहुल को राहत और भीखनुमा

घोषणाओं के हथियार के साथ चुनावी जंग में उतार दिया। जिन दलित, पिछड़ों इत्यादि वंचित वर्गो में नौकरियों से आगे बढ़कर उद्योग-व्यापार में भागीदारी की चाह पैदा हो चुकी हो, उन्हें नरेगा, मनरेगा के सहारे संतुष्ट करने का जो परिणाम सामने आना चाहिए, वह आ रहा है। इन वंचित तबकों द्वारा लगातार नकारे जाने का असर ही राहुल के राजनीतिक शैली पर पड़ा है। उनमें वह जोश नही दिख रहा है, जो राजनीति के युद्ध-क्षेत्र में अपेक्षित प्रभाव छोड़ने के लिए चाहिए। ऐसे में जरुरत है राहुल को ऐसे मुद्दों पर राजनीति करने की जिसके सहारे न सिर्फ कांग्रेस के पापों का प्रायश्चित हो सके बल्कि दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक और महिलाएं इत्यादि नए उमंग के साथ कांग्रेस से जुड़ सकें। और ऐसा इकलौता मुद्दा है शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का प्रतिबिम्बन। चूँकि शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का प्रतिबिम्बन न करने से ही कांग्रेस की ऐसी दुर्गति हुई है इसलिए इस दुरावस्था से उबरने का भी एकमात्र वैज्ञानिक समाधान शक्ति के स्रोतों में सामाजिक (सोशल) और लैंगिक (जेंडर) विविधता (डाइवर्सिटी) का प्रतिबिम्बन ही है। जब कांग्रेस डाइवर्सिटी के मुद्दे पर अपनी राजनीति स्थिर करेगी, तब शक्ति के स्रोतों से बुरी तरह वंचित सामाजिक समूह सेना-न्यायपालिका सहित सरकारी और निजी क्षेत्र की सभी प्रकार की नौकरियों, सप्लाई, डीलरशिप, ठेकों, पार्किंग, परिवहन, फिल्म-टीवी इत्यादि प्रत्येक क्षेत्र में ही अपनी हिस्सेदारी की सम्भावना देख कर पहले की तरह फिर कांग्रेस के साथ जुड़ जायेंगे। ऐसा होने पर जहाँ कांग्रेस अपने पापों का प्रायश्चित कर लेगी वहीं उन्हें राहुल के रूप में 21वी सदी का नया नेहरु मिल जायेगा। किन्तु कांग्रेस को इसके लिए कुछ खोना पड़ेगा। खोना यह पड़ेगा कि उसकी नीतियों के कारण जिन अल्पजन सवर्णो का शक्ति के स्रोतों पर प्रायः एकाधिकार स्थापित हुआ है,वह टूट जायेगा। क्या सवर्णवादी कांग्रेस के रणनीतिकार राष्ट्र, राहुल और 128 साल पुरानी पार्टी के हित में डाइवर्सिटी सिद्धांत अपनाने की जोखिम लेंगे!

राहुल की स्थिति क्रिकेटर सचिन जैसी

अंत में मैंने किताब के अंतिम पेज के आखिरी पैरे में कहा था **आज राहुल की स्थिति भारत के उस अन्यतम श्रेष्ठ क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर जैसी हो गयी है, जिन्हें कल संजय मांजरेकर जैसे कई क्रिकेट विशेषज्ञों ने रिटायर हो जाने का दबाव बनाना शुरू कर दिया था। किन्तु सचिन एक अन्तराल के बाद उस दबाव से मुक्त हुए और अपने जीवन के शेष वर्षो में इतनी दबंगई से बल्ला घुमाना शुरू किये कि जो उन्हें रिटायर होने की सलाह दे रहे थे, उन्हें शर्म से सिर छुपाने के लिए जगह ढूंढनी मुश्किल हो गयी। राहुल भी सचिन तेंदुलकर की तरह कल अपने विरोधियों को शर्मसार कर सकते हैंः बशर्ते की शक्ति के स्रोतों (आर्थिक-राजनीतिक-शैक्षिक-धार्मिक) में देश के अशक्तों-एससी/एसटी, ओबीसी, अल्पसंख्यकों और महिलाओं- को वाजिब हिस्सेदारी**

दिलाने के मुद्दे पर कांग्रेस आगे की चुनावी जंग राहुल गाँधी के नेतृत्व में लड़ें! इस पूरी किताब में मैंने जगह-जगह यही बताने के प्रयास किया था कि कांग्रेस की असल ताकत दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक रहे हैं। अतः अभूतपूर्व दुर्दिन में घिरी कांग्रेस में जो भी बदलाव हो वह वंचितों को सशक्त बनाने वाली कर्मसूचियों को रूपायित करने के लिए हो!

राहुल के समक्ष आईसीयू में पहुंची कांग्रेस के पुनरुद्धार की कठिन चुनौती

चर्चित राजनीतिक विश्लेषक अरविन्द मोहन के शब्दों में, **कांग्रेस एक दल की जगह एक संस्कृति बन चुकी है और सत्ता से बाहर होते ही बेचैन होना इसकी आदतों में शामिल है। पर, सौभाग्य से अभी तक उसके पास ऐसे नेता थे जो सत्ता से बाहर होते ही जनता के बीच जाते थे, समस्यायों को उठाते थे और कांग्रेस को वापस अपने दम पर सत्ता में लाते थे। इंदिरा गांधी ने यह काम दो मौकों पर किया–बंटवारे से कमजोर पड़ी कांग्रेस के लिए भी और 1977 में जनता के द्वारा सत्ता से बाहर करने के बाद भी। वैसे यह काम सोनिया गांधी ने भी किया। उनका काम और बड़ा लगता है क्योंकि तब कांग्रेस के सारे दिग्गज अलग हो गए थे और अटल बिहारी वाजपेयी का शासन गठबंधन राजनीति का शीर्ष था। सोनिया ने अपने दम पर कांग्रेस को न सिर्फ खड़ा किया, बल्कि दो-दो बार सत्ता में पहुंचा भी दिया। पर, यह सबसे बड़ा सच है कि एक आम हिन्दुस्तानी मां की तरह वे भी बाकी चीजों को दोयम दर्जे का मानने लगी हैं... अब देखने की बात होगी कि राहुल बाबा इससे कुछ सीखते हैं या नही, या आगे क्या कुछ करते हैं । उन पर और भी बहुत कुछ टिका है- वे यही तो नही समझते!**

इतिहास ने मोदी की सुनामी में आईसीयू में पहुंची, जिस कांग्रेस के पुनरुद्धार की चुनौती राहुल गांधी के समक्ष पेश की, वैसी चुनौती का सामना आज़ाद भारत में किसी को नहीं करना पड़ा था। यूपीए-2 का शासन ख़त्म होते-होते कांग्रेस सचमुच आईसीयू में पहुच चुकी थी। देश के विकास में आधारभूत काम करने ; उद्योग-धंधों से देश को समृद्ध करने के बावजूद कांग्रेस नई सदी में विविधतामय भारत की आकाँक्षाओं को पूरा करने सफल नहीं हो पायी थी। मंडल के बाद बहुजनों में जो आर्थिक,राजनीतिक आकांक्षा पनपी उसका सद्व्यवहार करने में कांग्रेस व्यर्थ रही। ऊपर से कोढ़ में खाज की तरह राजीव गांधी ने मंडल का तीव्र विरोध कर बहुजनों को भारी निराश कर दिया था। इस कारण दलित,आदिवासी, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों में असंतोष पनपा। इसी असंतोष को हवा देकर कांशीराम, मुलायम सिंह यादव, लालू प्रसाद यादव, मायावती इत्यादि कद्दावर नेता के रूप में उभरे। इनके उभार से उस हिंदी पट्टी में कांग्रेस की जमीन बुरी तरह दरक गयी, जहां से देश के राजनीति की दिशा तय होती। अगर कांशीराम, लालू-मुलायम दलित वंचितों में कांग्रेस के खिलाफ

लगातार असंतोष उभारते रहे तो इन्हीं के समानांतर भाजपा राम मंदिर का मुद्दा उठाकर कांग्रेस की जमीन कब्जाने में जुट गयी थी। ऐसे में कांग्रेस के विरुद्ध उभरते जनाक्रोश को भुनाने के लिए नरेंद्र मोदी ने 2014 में हर किसी के खाते में विदेशों से काला धन लाकर 100 दिन में 15 लाख जमा कराने तथा हर साल युवाओं को दो करोड़ नौकरियां देने तथा अच्छे दिन लाने जैसे सपने दिए और कांग्रेस आईसीयू में पहुंच गयी। कांग्रेस की विफलता से मिली सत्ता का मोदी ने संघ के अजस्र संगठनों, मीडिया और जांच एजेंसियों के सहयोग से ऐसा इस्तेमाल किया कि देखते ही देखते भाजपा अप्रतिरोध्य बन गयी और कांग्रेस का पुनरुद्धार एक दुस्साहसपूर्ण सपना बन गया। **यूँ ही वाल्टर रसेल मीड जैसे लोग भाजपा के 2024 में झंडे गाड़ने का दावा नही कर रहें हैं।** (भाजपा को हराना सबसे आसान पॉलिटिकल टास्क, पेज 173)। सत्ता में आने के नौ साल बाद भी मोदी कांग्रेस की 70 साल की कमियों पर प्रहार करने से नहीं चूकते। ऐसी कांग्रेस के पुनरुद्धार की जिम्मेवारी इतिहास ने राहुल के कंधे पर सौंपा। पर, कई बार श्राप भी वरदान बन जाता है,लेकिन उसके लिए उद्यम करना पड़ता है। संयोग से भाजपा का सत्ता में आना भी कांग्रेस के लिए कालांतर में कुछ-कुछ वरदान बन गया।

भाजपा का सत्ता में आना कांग्रेस के लिए बन गया वरदान!.

कांग्रेस के मुकाबले भाजपा ही एकमात्र ऐसी पार्टी थी, जो कांग्रेस का विकल्प होने का लम्बे समय से दावा करती रही। अटल बिहारी वाजपेयी के बाद जब संघ प्रशिक्षित मोदी बड़े सपने दिखाकर सत्ता में आएः दलित, आदिवासी,पिछड़े, अल्पसंख्यकों में मोहभंग की प्रक्रिया शुरू होने में देर नहीं लगी। मोदी सत्ता में आते ही जो आरक्षण इन वंचित वर्गों की उन्नति और प्रगति का आधार था, उसके खात्मे के लिए उन तमाम सरकारी संस्थानों को बेचने के काम में जुट गए, जहां वंचितों को आरक्षण मिलता था। यही नहीं प्रधानमंत्री के रूप में अपना पहला कार्यकाल ख़त्म होते-होते उन्होंने संविधान का मजाक उड़ाते हुए ईडब्ल्यूएस के नाम पर गरीब सवर्णों को 10% आरक्षण दे दिया। अपने कार्यकाल में जिस तरह मोदी वर्ग संघर्ष का इकतरफा खेल खेलते हुए राजसत्ता का इस्तेमाल शक्ति के समस्त स्रोत जन्मजात सुविधाभोगी वर्ग के हाथों में सौपने तथा बहुजनों को गुलाम बनाने में किये, उसके फलस्वरूप आज बहुजनों में उस सापेक्षिक वंचना (Relative Deprivation) के तुंग पर पहुचने लायक हालात पैदा हो चुके हैं, जो सापेक्षिक वंचना क्रांति की आग में घी का काम करती है। आज सापेक्षिक वंचना के उभार के जो हालात मोदी-राज में हैं, वैसे हालात न तो फ्रेंच क्रान्ति पूर्व रहे और न हो जारशाही के खिलाफ उठी वोल्सेविक क्रांति में! यही नहीं मोदी के कार्यकाल में यह निर्विवाद रूप से प्रमाणित हो चुका है कि भाजपा बहुजनों का वर्ग शत्रु है तो कांग्रेस वर्ग मित्र! ऐसी स्थिति में यदि सामाजिक न्याय

को बढ़ावा देने वाला प्रोग्राम लेकर लोगों को बीच जाया जाय, तो आरक्षण पर निर्भर रहने वाला वर्ग भाजपा को सत्ता से आउट कर देगा, यह उपलब्धि कांग्रेस नेतृत्व ने कर लिया । उसे इस बात का इल्म हो गया कि जो सामाजिक न्याय के झंडाबरदार हैं, वे अज्ञात कारणों से मोदी के खिलाफ सामाजिक न्याय का हथियार नहीं इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसे में सामाजिक न्याय का मैदान मुक्त पाकर कांग्रेस नेतृत्व ने सामाजिक न्याय को भाजपा के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की परिकल्पना की। किन्तु सामाजिक न्याय के हथियार को इस्तेमाल करने के पूर्व कांग्रेस नेतृत्व ने जनता से संवाद बनाने का मन बनाया। इसी क्रम में वजूद में आई भारत जोड़ो यात्रा!

भारत जोड़ो यात्रा से राहुल की छवि में आ गया आमूल बदलाव

जैसा कि पूर्व पंक्तियों में अरविन्द मोहन ने इंदिरा और सोनिया गाँधी को उद्धृत करते हुए कहा है कि कांग्रेस में ऐसे नेता थे जो सत्ता से बाहर होते ही जनता के बीच जाते थे, समस्यायों को उठाते थे और कांग्रेस को वापस अपने दम पर सत्ता में लाते थे। इनका अनुसरण करते हुआ राहुल गांधी भी भारत जोड़ों यात्रा के जरिये जनता से संवाद बनाने के लिए सड़कों पर उतरे और और 3750 किमी लम्बी ऐसी यात्रा कर डाले जो इतिहास बन गया एवं जिसकी तुलना सिर्फ भारत का इतिहास बदलने वाली महात्मा गांधी की दांडी यात्रा से हो सकती है। लेखक जावेद अनीस ने अपने लेख–**राहुल गाँधी : भारतीय राजनीति के दारा शिकोह** में भारत जोड़ो यात्रा पर निष्कर्ष दिया है, **राहुल गाँधी की यात्रा उनके लिए एक तपस्या और स्वयं के खोज की तरह रही। इस यात्रा ने उन्हें एक ऐसे राष्ट्रीय नेता के तौर पर स्थापित होने में मदद की है, जिसके सरोकार चुनावी राजनीति के गुना-भाग से ऊपर है'। इस यात्रा ने विपक्ष द्वारा हजारों करोड़ खर्च करके मीडिया में राहुल की बनायी गयी नकारात्मक छवि को ख़त्म कर दिया। राहुल विरोधियों द्वारा जो उनकी छवि 'अगंभीर, बेपरवाह, कमअक्ल और 'पार्ट टाइम पॉलिटिशियन' राजनेता की बनायी गयी थी, भारत जोड़ो यात्रा ने उसे अतीत का विषय बना दिया!**

और राहुल बन गए सामाजिक न्याय की राजनीति का नया आइकॉन!

भारत जोड़ो यात्रा के कुछ अन्तराल बाद रायपुर में कांग्रेस का 85 वां अधिवेशन आयोजित हुआ। लोकसभा चुनाव 2024 की पृष्ठभूमि में आयोजित इस अधिवेशन में सामाजिक न्याय से जुड़े कुछ ऐसे प्रस्ताव पारित हुए जिसका असर युगांतकारी हो सकता है। सामाजिक न्याय से जुड़े ऐसे प्रस्ताव शायद ही किसी पार्टी की ओर से पारित हुए होंगे। जहां तक कांग्रेस का सवाल है सुप्रसिद्ध पत्रकार उर्मिलेश के शब्दों में, **वैसे प्रस्ताव कांग्रेस पार्टी पारित कर सकती है, उसकी कल्पना भी नही की जा सकती! ऐसे प्रस्ताव के विचार कभी कांग्रेस पार्टी में उठे ही नही और जिसने**

कभी उठाने की कोशिश की उसे हूट कर दिया जाता था। कांग्रेस पार्टी के इतिहास में नेहरु, इंदिरा और राजीव एरा में ऐसा सोचा भी नही गया।' रायपुर अधिवेशन से कांग्रेस की सोच में सामाजिक न्याय को जगह देने वाले राहुल गाँधी ने कर्णाटक में बेख़ौफ़ होकर सामाजिक न्याय का सफल खेल खेला। उसके बाद तो कोई उन्हें 'लिविंग बुद्धा' तो कोई सामाजिक न्याय की राजनीति का नया आइकॉन बता रहा है।

इस मामले में कोलार का उनका भाषण सामाजिक न्याय की राजनीति में मील का एक पत्थर है, जहां उनका भाषण सुनकर योगेन्द्र यादव जैसे अनुभवी चिन्तक को कहना पड़ा, **राहुल गाँधी का कोलार वाला भाषण किसी क्षणिक आवेग की देन नही। कांग्रेस सामाजिक न्याय की खोई हुई अपनी जमीन हासिल करने की कोशिश कर रही है, कांग्रेस कभी गरीब, दलित, आदिवासी तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों की पसंदीदा पार्टी हुआ करती थी। समाज के अन्य वर्गो की तुलना में इन तबकों के वोट अब भी कांग्रेस को कही ज्यादा मिलते हैं। लेकिन कांग्रेस के नेतृत्व,नीति तथा कार्यक्रमों में इस जमीनी सच्चाई की झलक मिलनी बंद हो गयी। राहुल गाँधी इस दोष को दूर करना चाहते हैं! कोलार का उनका भाषण सामाजिक न्याय की राजनीति में एक नए मोड़ की सूचना है।** रायपुर से लेकर कर्णाटक तक राहुल गाँधी ने सामाजिक न्याय की राजनीति को जो बुलंदी प्रदान की, उस कारण ही प्रो. रविकांत जैसे चिंतकों को उन्हें सामाजिक न्याय की राजनीति का नया आइकॉन बताने कोई द्विधा नहीं हुई! स्मरण रहे कर्नाटक का चुनाव परिणाम आने के बाद देश के प्रखर दलित चिंतक प्रो. रविकांत ने 18 मई को 'द वायर' में लिखा—**कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस के पास सामाजिक न्याय का पूरा पैकेज था। नेता भी और प्रचार भी इसके पीछे जिस नेता की नीयत है, उसका नाम राहुल गांधी है। राहुल गांधी आज सामाजिक न्याय की राजनीति के नये आइकॉन बनकर सामने आ रहे हैंः कर्नाटक चुनाव ने इस पर अपनी समर्थन की मोहर लगाई है!**

कर्णाटक की चुनावी फिजा में उन्होंने साहेब कांशीराम ऐतिहासिक नारा **जितनी जिसकी आबादी, उसकी उतनी हिस्सेदारी** उछाल कर एक बड़े विस्मय की सृष्टि कर दिया है। कोई सोच भी नहीं सकता कि कोई गैर-बहुजन नेता कांशीराम का क्रान्तिकारी नारा फिजा में गुंजित करने का साहस करेगा। पर, राहुल ऐसा इसलिए कर सके क्योंकि वह समग्र-वर्ग की चेतना से समृद्ध हैं, जिस मामले में भारत के बड़े-बड़े नेता, साधु-संत, लेखक-पत्रकार काफी हद तक दरिद्र रहे! उन्होंने सामाजिक न्याय का अपना विजन कांशीराम के ऐतिहासिक नारे के जरिये इन शब्दों में जाहिर कर दिया है, **यदि 70 प्रतिशत भारतीय ओबीसी/एससी/एसटी जातियों के हैं, तो विभिन्न व्यवसायों और क्षेत्रों में उनका प्रतिनिधित्व भी मोटे तौर पर 70 प्रतिशत होना चाहिए।** यह वही बात है जिसको 2002 के भोपाल सम्मलेन से डाइवर्सिटीवादी बार-बार राष्ट्र के समक्ष रखते रहे हैं। राहुल गांधी की 'जिसकी जितनी आबादी, उसकी उतनी

हिस्सेदारी' का व्यवहारिक मतलब है कि सरकारी और निजी की नौकरियों के साथ अर्थोपार्जन की समस्त गतिविधियों—सप्लाई, डीलरशिप, ठेकेदारी, ट्रांसपोर्टेशन, मीडिया, शैक्षणिक संस्थाओं में भारत के विविध सामाजिक समूहों और उनकी महिलाओं के संख्यानुपात में भागीदारी! सामाजिक न्याय के नए आइकॉन का समतावादी विजन जमीन पर उतरेगा, इसके प्रति ढेरों लोग आशावादी हैं।

सामाजिक न्याय की अपनी खोई जमीन हासिल करने के लिए क्या करे कांग्रेस

कांग्रेस में सामाजिक न्याय की अपनी खोई जमीन हासिल करने जो प्रयास शुरू हुआ है, उस पर इस किताब में प्रख्यात चिन्तक योगेन्द्र यादव का **मंडल-3** की गाड़ी हांक सकते हैं राहुल गांधी 'शीर्षक से प्रकाशित लेख बेहद महत्वपूर्ण है, जिसे पाठकों से एकाधिक बार पढने का अनुरोध करूँगा। इस लेख में उन्होंने सामाजिक न्याय की राजनीति को लेकर कुछ बहुत ही विचारोत्तेजक सवाल खड़े किये हैं। जैसे उन्होंने कहा है, **सामाजिक न्याय की राजनीति वैसी नही रही जैसी कि सन 1990 के दशक में हुआ करती थी। और कांग्रेस जो कुछ तीन दशक पहले कर सकती थी, वैसा आज नही कर सकती। सामाजिक न्याय की राजनीति और नीतियों से जुडी नई चुनौतियों से निबटने के लिए कांग्रेस को अपनी प्राथमिकताओं तथा रणनीतियों पर नए सिरे से विचार करना होगा।** इसके लिए उन्होंने चार विचार सुझाये हैं, जिनमें एक यह है कि कांग्रेस को अपनी खोई जमीन हासिल करने के साथ ही साथ सामाजिक न्याय के नए दायरों पर कब्ज़ा जमाना होगा। वह कहते हैं, **फिलहाल सामाजिक न्याय से जुडी सोच सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरियों में आरक्षण तक सिमटी है जबकि इन क्षेत्रों में नौकरियां तेजी से कम होती जा रही हैं। बेशक सरकारी क्षेत्र के भीतर कुछ दायरे ऐसे हैं जिनपर दावा जताने की जरुरत है (रायपुर अधिवेशन के प्रस्ताव में ठीक ही उच्चतर न्यायपालिका में एससी/ एसटी-ओबीसी को प्रतिनिधित्व देने की बात कही गयी है। लेकिन आज मुख्य जोर गैर-सरकारी क्षेत्र जैसे मीडिया तथा एनजीओ में प्रतिनिधित्व बढ़ाने पर होनी चाहिए। रायपुर अधिवेशन के प्रस्ताव में ठीक ही इस चर्चा की शुरुआत की गयी है कि निजी क्षेत्र की नौकरियों तक सभी वर्गों की समान पहुंच होनी चाहिए।' उन्होंने सही सामाजिक न्याय सुलभ करने के लिए एससी, एसटी, ओबीसी के भीतर आरक्षण उपकोटा बनाये जाने का भी सुझाव दिया है।**

बहरहाल योगेन्द्र यादव के शब्दों में अगर कांग्रेस को अपनी खोई जमीन हासिल करने के लिए सामाजिक न्याय के नए दायरों पर कब्ज़ा जमाना जरुरी है तो इस लिहाज से किताब के पहले संस्करण में पेज 28 से 29 तक सुझाये गए बहुजन डाइवर्सिटी मिशन के दस सूत्रीय एजेंडे पर अमल करने से बेहतर कुछ हो ही नहीं सकता। 2007 में स्थापित बहुजन डाइवर्सिटी मिशन आर्थिक और सामाजिक विषमता

Continue Your Reading Journey

This preview has ended. Access the complete library and support our mission.

Join Our Inclusive Reading Community

- ✓ We champion diverse voices and perspectives
- ✓ Your support helps amplify underrepresented authors
- ✓ We provide free access to educational institutions
- ✓ Building bridges through shared stories
- ✓ Creating space for all narratives to be heard

Support Our Mission

Your donation enables us to:

- Curate diverse book collections
- Support authors from marginalized communities
- Provide free resources to educators
- Maintain our accessible digital library

Visit: www.diversitymission.in

Sign the diversity pledge • Make a donation • Download full library